

परिवार और उनके सदस्यों पर प्रभाव

परिवार और उसके सदस्यों पर सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव समाजशास्त्र एवं समाज कार्य का महत्वपूर्ण विषय है। परिवार समाज की सबसे प्राथमिक और महत्वपूर्ण संस्था है। समाज में होने वाले आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और वैचारिक परिवर्तन सीधे परिवार की संरचना, कार्यप्रणाली तथा उसके सदस्यों के जीवन को प्रभावित करते हैं।

1. परिवार की संरचना पर प्रभाव

आधुनिक सामाजिक परिवर्तन के कारण संयुक्त परिवारों की अपेक्षा एकल परिवारों की संख्या बढ़ी है। रोजगार, शिक्षा और शहरों की ओर पलायन के कारण परिवार छोटे होते जा रहे हैं। इससे परिवार के सदस्यों के बीच पारंपरिक सहयोग में परिवर्तन आया है।

2. पति-पत्नी के संबंधों पर प्रभाव

शिक्षा और महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ने से पति-पत्नी के संबंध अधिक समानता एवं साझेदारी पर आधारित हो रहे हैं। घरेलू कार्यों और आर्थिक जिम्मेदारियों का विभाजन भी बदल रहा है।

3. बच्चों पर प्रभाव

परिवार के बदलते स्वरूप का बच्चों के जीवन पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा और आधुनिक सुविधाओं के अवसर बढ़े हैं।

बच्चों को स्वतंत्र निर्णय लेने के अवसर मिलते हैं।

लेकिन माता-पिता के व्यस्त रहने से बच्चों को पर्याप्त समय न मिल पाने की समस्या हो सकती है।

डिजिटल मीडिया और तकनीक का प्रभाव भी बच्चों के व्यवहार एवं सामाजिकरण पर पड़ता है।

4. महिलाओं पर प्रभाव

शिक्षा, रोजगार और कानूनी अधिकारों के विस्तार से महिलाओं की स्थिति एवं निर्णय लेने की

क्षमता में वृद्धि हुई है। वे परिवार की आर्थिक व्यवस्था में योगदान देने के साथ-साथ शिक्षा, रोजगार और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

5. पुरुषों की भूमिका में परिवर्तन

परंपरागत रूप से पुरुष को परिवार का मुख्य कमाने वाला माना जाता था। वर्तमान में यह भूमिका बदल रही है। पुरुष घरेलू कार्यों, बच्चों की देखभाल और परिवार की अन्य जिम्मेदारियों में अधिक भागीदारी कर रहे हैं।

6. वृद्ध सदस्यों पर प्रभाव

एकल परिवारों के बढ़ने से वृद्ध माता-पिता के सामने अकेलेपन, देखभाल और आर्थिक सुरक्षा जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। दूसरी ओर, वृद्धावस्था पेंशन, स्वास्थ्य सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं ने कुछ हद तक उनकी सहायता की है।

7. पारिवारिक मूल्यों पर प्रभाव

परंपरागत परिवार में आज्ञाकारिता, सामूहिकता और पारिवारिक प्रतिष्ठा को अधिक महत्व दिया जाता था। आधुनिक परिवार में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, शिक्षा, व्यक्तिगत पसंद और आत्मनिर्भरता को अधिक महत्व मिलने लगा है।

8. विवाह संबंधों पर प्रभाव

शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के कारण विवाह की आयु, जीवनसाथी के चुनाव और विवाह संबंधी निर्णयों में परिवर्तन आया है। प्रेम विवाह, अंतरजातीय विवाह और समानता आधारित वैवाहिक संबंधों को पहले की तुलना में अधिक स्वीकृति मिल रही है।

9. आर्थिक प्रभाव

औद्योगीकरण और रोजगार के नए अवसरों के कारण परिवार की आय के स्रोतों में विविधता आई है। पति-पत्नी दोनों के कार्य करने से परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है, लेकिन काम और परिवार के बीच संतुलन की चुनौती भी उत्पन्न होती है।

10. पारिवारिक कार्यों पर प्रभाव

परंपरागत रूप से परिवार शिक्षा, समाजीकरण, आर्थिक उत्पादन, सुरक्षा और मनोरंजन जैसे अनेक कार्य करता था। आधुनिक समय में इनमें से कई कार्य विद्यालय, अस्पताल, बाजार, बाल देखभाल

केंद्र और अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी किए जाने लगे हैं।

11. पारिवारिक संघर्ष पर प्रभाव

बदलती जीवनशैली, आर्थिक दबाव, पीढ़ियों के बीच विचारों का अंतर, कार्य का तनाव और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती अपेक्षाएँ पारिवारिक संघर्ष का कारण बन सकती हैं। इसलिए परिवार में संवाद और आपसी समझ का महत्व बढ़ गया है।

12. सकारात्मक प्रभाव

परिवार में स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ावा।

शिक्षा एवं रोजगार के बेहतर अवसर।

बच्चों के विकास के लिए बेहतर सुविधाएँ।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि।

परिवार के सदस्यों में निर्णय लेने की क्षमता का विकास।

सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूकता।

13. नकारात्मक प्रभाव

संयुक्त परिवारों का विघटन।

वृद्धों और बच्चों की देखभाल की समस्या।

पारिवारिक तनाव और पीढ़ीगत संघर्ष।

अकेलापन और सामाजिक अलगाव।

काम और परिवार के बीच संतुलन की समस्या।

निष्कर्ष

इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन ने परिवार की संरचना, कार्यों, संबंधों और सदस्यों की भूमिकाओं में व्यापक परिवर्तन किया है। इन परिवर्तनों ने परिवार को अधिक समानतापूर्ण और आधुनिक बनाया है, लेकिन साथ ही अकेलापन, तनाव, वृद्धों की देखभाल और पारिवारिक विघटन जैसी चुनौतियाँ भी पैदा की हैं। इसलिए आधुनिक परिवार के लिए समानता, सहयोग, संवाद, पारस्परिक सम्मान और जिम्मेदारी अत्यंत आवश्यक हैं।